



श्री हनुमान चालीसा

Hanuman Chalisa

GOSWAMI TULSIDAS · 40 VERSES

DOHA

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

CHAUPAI

- ① जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिरुँ लोक उजागर ॥
- ② राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
- ③ महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
- ④ कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
- ⑤ हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
- ⑥ संकर सुवन केसरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
- ⑦ बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥
- ⑧ प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लषन सीता मन बसिया ॥

- 9 सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
- 10 भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचंद्र के काज सँवारे ॥
- 11 लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
- 12 रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
- 13 सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
- 14 सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥
- 15 जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
- 16 तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
- 17 तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
- 18 जुग सहस्त्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
- 19 प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँचि गये अचरज नाहीं ॥
- 20 दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
- 21 राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
- 22 सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डर ना ॥

- 23 आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
- 24 भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥
- 25 नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
- 26 संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
- 27 सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥
- 28 और मनोरथ जो कोइ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
- 29 चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
- 30 साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥
- 31 अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥
- 32 राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥
- 33 तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
- 34 अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
- 35 और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥
- 36 संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

- 37 जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥
- 38 जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
- 39 जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
- 40 तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

DOHA

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप ।
राम लषन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥



श्री हनुमान अष्टक

Sankat Mochan Hanuman Ashtak

GOSWAMI TULSIDAS · 8 VERSES + DOHA

- ① बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो ॥
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥
- ② बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो ॥
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥
- ③ अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो ॥
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥
- ④ रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो ॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ॥
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥
- ⑤ बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो ॥
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो ॥
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥
- ⑥ रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो ॥
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥

- ⑦ बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
 देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ॥
 जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ॥
 को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥
- ⑧ काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
 कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ॥
 बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ॥
 को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥

DOHA

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर ।
 बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

ॐ

श्री बजरंग बाण

Bajrang Baan

SHRI HANUMAN

DOHA

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करें सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान ॥

CHAUPAI

- ① जय हनुमंत संत हितकारी ।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
- ② जन के काज बिलंब न कीजै ।
आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥
- ③ जैसे कूदि सिंधु महिपारा ।
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥
- ④ आगे जाय लंकिनी रोका ।
मारेहु लात गई सुरलोका ॥
- ⑤ जाय बिभीषन को सुख दीन्हा ।
सीता निरखि परमपद लीन्हा ॥
- ⑥ बाग उजारि सिंधु महुँ बोरा ।
अति आतुर जमकातर तोरा ॥
- ⑦ अक्षय कुमार मारि संहारा ।
लूम लपेटि लंक को जारा ॥
- ⑧ लाह समान लंक जरि गई ।
जय जय धुनि सुरपुर नभ भई ॥
- ⑨ अब बिलंब केहि कारन स्वामी ।
कृपा करहु उर अन्तर्यामी ॥
- ⑩ जय जय लखन प्राण के दाता ।
आतुर ह्वै दुःख करहु निपाता ॥

- ॥ जै गिरिधर जै जै सुख सागर ।
सुर-समूह-समरथ भटनागर ॥
- ॥ १२ ॥ ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले ।
बैरिहि मारु बज्र की कीले ॥
- ॥ १३ ॥ गदा बज्र लै बैरिहिं मारो ।
महाराज प्रभु दास उबारो ॥
- ॥ १४ ॥ ॐ कार हुंकार महाप्रभु धावो ।
बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥
- ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीशा ।
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ॥
- ॥ १६ ॥ सत्य होहु हरि शपथ पायके ।
राम दूत धरु मारु जाय के ॥
- ॥ १७ ॥ जय जय जय हनुमंत अगाधा ।
दुःख पावत जन केहि अपराधा ॥
- ॥ १८ ॥ पूजा जप तप नेम अचारा ।
नहिं जानत हौं दास तुम्हारा ॥
- ॥ १९ ॥ वन उपवन मग गिरि गृह माहीं ।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥
- ॥ २० ॥ पांय परौं कर जोरि मनावौं ।
येहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
- ॥ २१ ॥ जय अंजनि कुमार बलवंता ।
शंकर सुवन वीर हनुमंता ॥
- ॥ २२ ॥ बदन कराल काल कुल घालक ।
राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥
- ॥ २३ ॥ भूत प्रेत पिशाच निशाचर ।
अग्नि बेताल काल मारी मर ॥
- ॥ २४ ॥ इन्हें मारु तोहि शपथ राम की ।
राखु नाथ मरजाद नाम की ॥

- 25) जनकसुता हरि दास कहावो ।
ताकी शपथ बिलंब न लावो ॥
- 26) जै जै जै धुनि होत अकासा ।
सुमिरत होय दुसह दुःख नाशा ॥
- 27) चरण शरण कर जोरि मनावौं ।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
- 28) उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई ।
पाँय परौं कर जोरि मनाई ॥
- 29) ॐ चं चं चं चं चपल चलंता ।
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ॥
- 30) ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल ।
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ॥
- 31) अपने जन को तुरत उबारो ।
सुमिरत होय आनंद हमरो ॥
- 32) यह बजरंग बाण जेहि मारै ।
ताहि कहो फिरि कौन उबारै ॥
- 33) पाठ करै बजरंग बाण की ।
हनुमत रक्षा करै प्रान की ॥
- 34) यह बजरंग बाण जो जापै ।
ताते भूत-प्रेत सब कापै ॥
- 35) धूप देय जो जपै हमेशा ।
ताके तन नहिं रहै कलेशा ॥

DOHA

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

ॐ

श्री हनुमान आरती

Aarti Kije Hanuman Lala Ki

SHRI HANUMAN

DHYAN

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

AARTI

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाके बल से गिरवर काँपे ।
रोग-दोष जाके निकट न झाँके ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई ।
संतन के प्रभु सदा सहाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

दे वीरा रघुनाथ पठाए ।
लंका जारि सिया सुधि लाये ॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई ।
जात पवनसुत बार न लाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

लंका जारि असुर संहारे ।
सियाराम जी के काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे ।
लाये संजिवन प्राण उबारे ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

पैठि पताल तोरि जमकारे ।
 अहिरावण की भुजा उखारे ॥
 बाई भुजा असुर दल मारे ।
 दाहिने भुजा संतजन तारे ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

सुर-नर-मुनि जन आरती उतरें ।
 जय जय जय हनुमान उचारें ॥
 कंचन थार कपूर लौ छाई ।
 आरती करत अंजना माई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे ।
 बसहिं बैकुंठ परम पद पावे ॥
 लंक विध्वंस किये रघुराई ।
 तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

A free offering from hanumanashtak.in · please share, do not sell.